प्रस्तुतकर्ता
संजय भारती
असिस्टेंट प्रोफेसर -समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी, वाराणसी

विषय- समाजशास्त्र
नई शिक्षा नीति – 2020
इकाई –प्रथम
बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर (माइनर एंड मेजर)
पुस्तक - समाजशास्त्र के मूल तत्व एवं अवधारणाएं
उपशीर्षक- समाजशास्त्र का जन्म एवं विकास

स्वघोषणा
(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

समाजशास्त्र का जन्म एवं विकास

1. समाजशास्त्र के उदय के कारण उद्योग एवं पूंजीवाद
2. तात्कालिक कारण
3. अमेरिका में विकास

समाजशास्त्र के उदय के कारण उद्योग एवं पूंजीवाद-

समाजशास्त्र के उदय का मूल कारण उद्योग और पूंजीवाद है। उद्योग का विकास, कारखानों का विकास, मशीनों का विकास पूंजीवाद के संदर्भ में हुआ एवं उद्योग और पूंजीवाद ने पुराने समाज को असंगठित कर दिया। समाज में समन्वय एवं स्थिरता हो, इसके लिए समाजशास्त्र का उदय हुआ। पूरे विश्व में सबसे पहले उद्योग और पूंजीवाद का आरंभ इंग्लैंड और हालैंड में हुआ। इन दोनों देशों में उद्योग के कारण एवं पूंजीवाद के कारण समाज में बहुत अधिक बिखराव हुआ तथा बार-बार लोगों के बीच में संघर्ष हुआ, लेकिन देश के शासक वर्ग ने अपनी बुद्धिमत्ता तथा कल्पनाशीलता के बल पर समाज की स्थिति पर नियंत्रण बनाए रखा, जिससे समाज में शांति और व्यवस्था कायम रही।

तात्कालिक कारण

फ्रांस में उद्योग और पूंजीवाद का आरंभ इंग्लैंड के लगभग 100 साल के बाद हुआ। फ्रांस और इंग्लैंड में पुश्तैनी प्रतिद्वंदिता रही है। इसके चलते फ्रांस का औद्योगिकरण इंग्लैंड से कुछ अलग हुआ। उस समय फ्रांस में तीन विशेषताएं थी -

1. इंग्लैंड से पिछड़ जाने का भाव होने के कारण फ्रांस में औद्योगीकरण की प्रक्रिया बहुत तेज थी। यही कारण था कि फ्रांस में बहुत अधिक परिवर्तन हुए और समाज के सभी क्षेत्रों में गुणात्मक परिवर्तन हो गए।

2. फ्रांस के शासक वर्ग बहुत अधिक कल्पनाशील नहीं थे जिससे वे समय के चरित्र को पहचान नही सके। इसमें दोष उनके इतिहास का भी था। कुछ ही समय पहले फ्रांस में लुई 14 का शासन था जो अपने को ईश्वर करते थे। यूरोप के सबसे शक्तिशाली शासक थे। यूरोप में उन्होंने नई प्रणाली को स्थापित किया था, इसी गौरव भाव से फ्रांस प्रभावित था उन्होंने फ्रांस में परिवर्तनों का विरोध किया वे परिवर्तन का जितना ही विरोध करते रहे परिवर्तन की आंधी उतनी ही बढ़ती गई।

3. फ्रांस की जनता यूरोप के अन्य देशों से अधिक संवेदनशील है। यहाँ की जनता बहुत जल्दी क्रोधित होती है और प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करती है। यही कारण था कि फ्रांस में बहुत अधिक हिंसा हुई स्वयं फ्रांस में आंदोलनकारी बड़ी संख्या में मारे गए, वहां पुरोहितों की हत्या हुई और राजतंत्र को उखाड़ फेंका गया।

उपरोक्त तीनों कारणों के परिणाम को फ्रांसीसी क्रांति करते हैं जिसके संबंध में डेविड टामसन ने कहा-"समाजशास्त्र विषय भी फ्रांसीसी क्रांति रूपी समुद्र मंथन से पैदा हुआ।" फ्रांसीसी क्रांति के अनेक परिणाम हुए।

समाजशास्त्र विषय का जन्म फ्रांसीसी क्रांति से तो हुआ लेकिन उद्योग और पूंजीवाद से इंग्लैंड में भी उथल-पुथल हुआ परंतु शासक की दूरदर्शिता के कारण वह रुकने लगा। फ्रांस में भयंकर हिंसा, अराजकता और बिखराव हुआ लेकिन शासक की अदूरदर्शिता एवं पुराने गौरव भाव के कारण नहीं रुक सका, जिसके चलते सेंट साइमन ने कहा एक नया विषय होना चाहिए जोकि समाज का अध्ययन करें एक नए विषय 'सोशल फिजियोलॉजी' का प्रस्ताव दिया, लेकिन सेंट साइमन के विचार अधिक लोकप्रिय नहीं हो सके। उनके बुद्धिमान क्षमतावान एवं महत्वाकांक्षी सचिव अगस्त काम्ट ने भी समाज के अध्ययन के लिए एक नए विषय की आवश्यकता को महसूस

किया और आवश्यक समझा जिसका नाम सर्वप्रथम सोशल फिजिक्स रखा परंतु यह शब्द पहले से ही दूसरे विद्वानों के द्वारा प्रयोग किए जाने के कारण अगस्त काम्ट ने 1838 में अपने विषय का नाम 'सोशल फिजिक्स' से बदलकर 'समाजशास्त्र ' शब्द रख दिया और कहा कि समाजशास्त्र के माध्यम से समाज का अध्ययन करने के बाद ऐसे निष्कर्ष प्राप्त होंगे जिससे समाज में व्यवस्था और प्रगति की श्रृंखला कायम हो सकेगी। फ्रांस में समाजशास्त्र आरंभ तो हो गया लेकिन इसका विकास नहीं हो सका। क्योंकि फ्रांस में क्रांति ने गंभीर अराजकता एवं बिखराव को जन्म दिया। जिसके कारण सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर बिखराव लंबे समय तक चलता रहा। राजनीतिक स्तर पर नेपोलियन ने अपने को सम्राट घोषित किया एवं कानून एवं व्यवस्था को सख्ती से लागू किया जिससे राजनैतिक स्थिरता तो आ गई लेकिन सामाजिक स्थिरता नहीं आयी और यही कारण था कि फ्रांसीसी क्रांति के बावजूद भी फ्रांस में समाजशास्त्र का जन्म तो हुआ लेकिन विकास नहीं हो सका।

अमेरिका में विकास

संयुक्त राज्य अमेरिका यूरोप के संपर्क में था। अमेरिका में भी समाजशास्त्र विषय की चर्चा पर विचार किया जाने लगा। उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका में भी तीन प्रमुख समस्याएं समाज में विद्यमान थी। जिसके कारण अमेरिका में समाजशास्त्र का विकास हुआ। उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका की समस्याएं इस प्रकार की थी।

1. संयुक्त राज्य अमेरिका में पूरी दुनिया से और विशेष रूप से यूरोप से और दक्षिण अमेरिका से बहुत लोग आ गए थे। जिससे अमेरिका के लिए सभी लोगों का समायोजन और समन्वय समस्या बन गई थी। इस समस्या के निदान के लिए समाजशास्त्र विषय रूपी विषय के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं था।
2. संयुक्त राज्य अमेरिका में उस समय अश्वेत और गोरो के असमान संबंधों के समस्या बनी हुई। अश्वेत जहां अपने अधिकारों की लगातार मांग कर रहे थे वही गोरे लोग किसी भी हाल में उन्हें अधिकार देने के पक्ष में नहीं थे। जिसके कारण दोनों ही प्रजातियों में भविष्य में संघर्ष

होने की संभावना बनती जा रही थी, ऐसी स्थिति में उस समय प्रजाति संबंधों का अध्ययन कर लोगों के बीच में एकता और समायोजन बनाना भी समाजशास्त्र के अध्ययन और विकास तथा लोकप्रियता का कारण बनता जा रहा था।

3. अमेरिका में अधिकतर लोग महत्वाकांक्षी थे लोगों के बीच गंभीर प्रतियोगिताए एवं प्रतिस्पर्धा हुई लोगों ने किसी भी हाल में अपने को सफल बनाने की बात तो थी। लेकिन बढ़ते पूंजीवाद ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया जिसमें अपराध, गरीबी, बेरोजगारी, अविवाहित माताओं की समस्या बढ़ती जा रही थी। इन समस्याओं के समाधान के लिए समाजशास्त्र विषय से लोगों की उम्मीद बढ़ती जा रही थी।

उपरोक्त कारणों से संयुक्त राज्य अमेरिका में समाजशास्त्र का अध्ययन एवं विकास प्रारंभ हो गया संयुक्त राज्य अमेरिका में समाजशास्त्र का जन्म मनोविज्ञान की कोख से हुआ मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्री मिलकर एक तरफ पूंजीवादी संरचना और दूसरी ओर व्यक्तिगत स्पर्धा का अध्ययन करना चाहते थे। संयुक्त राज्य अमेरिका में समाजशास्त्र को लोकप्रिय बनाने में हरबर्ट स्पेंसर को श्रेय दिया जाता है। स्पेंसर ने व्यक्तिगत प्रतियोगिता और योग्यतम जीविता का सिद्धांत दिया। जिसके कारण अमेरिका में लोगों ने प्रयास किया और आगे बढ़ सके, लेकिन मनोविज्ञान के साथ समाजशास्त्र विषय को एक दूसरे के साथ संबंधित नहीं मान रहे थे क्योंकि अधिकांश विद्वान पूंजीवाद को पसंद नहीं कर रहे थे।

समाजशास्त्र को अनेक विद्वान अन्य विषयों से संबंधित करते थे, जिसके कारण समाजशास्त्र एक विषय के रूप में स्पष्ट नहीं हो पा रहा था, दुर्खीम ने सर्वप्रथम समाजशास्त्र एवं उसकी विषय वस्तु को स्पष्ट किया जिसके कारण इमाइल दुर्खीम को समाजशास्त्र का पिता तथा अगस्त काम्ट को समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ-

1.हुसैन,मुजतबा, 2012, समाजशास्त्री विचार, ओरियंट ब्लैक स्वान, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

2. मुखर्जी, रविंद्र नाथ, 2000, सामाजिक विचारधारा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली।
3. अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017, समाजशास्त्र, बी़. ए. तृतीय वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।
4. रावत, हरीकृष्ण, 2005, समाजशास्त्री चिंतक एवं सिद्धांतकार, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. दोस्ती, यस. एल., 2010, आधुनिक समाजशास्त्री विचारक, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6.रावत, हरीकृष्ण, 2015, उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. शर्मा, एम. एल. एवं शर्मा डी. डी, 2002, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेश,आगरा
8.अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017 , समाजशास्त्र, बी़. ए. प्रथम वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस, आगरा।